International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय समाज में विधवाओं की बदलती स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन : छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग नगर के विशेष संदर्भ में

Neelam Trehan

Sociology

शोध सार (Abstract)

यह शोध-पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग नगर की विधवा महिलाओं की बदलती सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है। 300 उत्तरदाताओं पर आधारित यह अध्ययन यह दर्शाता है कि पारंपरिक समाज में जहाँ विधवाओं को तिरस्कार एवं भेदभाव का सामना करना पड़ता था, वहीं वर्तमान में शिक्षा, जागरूकता और शासकीय योजनाओं के माध्यम से उनकी स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं।

शोध में यह भी पाया गया कि विधवाओं को अब भी कई स्तरों पर चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, विशेषतः युवा, आर्थिक रूप से आश्रित और एकल परिवारों में रहने वाली महिलाओं को इस शोध में सांख्यिकीय आधार पर विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं और कुछ व्यावहारिक सुझाव भी दिए गए हैं जो समाज में विधवा महिलाओं की स्थिति को सुदृढ़ करने की दिशा में सहायक हो सकते हैं।

प्रस्तावना:

भारतीय समाज में विधवाओं की स्थिति एक अत्यंत जटिल एवं संवेदनशील विषय रहा है। पारंपरिक समाज में विधवाओं को अनेक सामाजिक बंधनों, मानसिक यातनाओं और आर्थिक निर्भरता का सामना करना पड़ा। परंतु समय के साथ सामाजिक चेतना, शिक्षा, कानूनी जागरूकता और महिला सशक्तिकरण के चलते इनकी स्थिति में अनेक सकारात्मक परिवर्तन भी हुए हैं। इस शोध में छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग नगर के विशेष संदर्भ में विधवा महिलाओं की वर्तमान पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक एवं भावनात्मक स्थिति का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य:

- विधवा महिलाओं की पारिवारिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन।
- विधवा महिलाओं के प्रति परिवार एवं समाज के दृष्टिकोण का अध्ययन।
- विधवा महिलाओं की समस्याओं, बदलती मानसिकता एवं दृष्टिकोण का अध्ययन।
- विधवा महिलाओं की स्थिति को सुधारने में संवैधानिक प्रयासों एवं शासकीय योजनाओं से संतुष्टि का अध्ययन।

परिकल्पनाएँ:

1. उच्च वर्ग की अपेक्षा मध्यवर्गीय परिवारों की विधवा महिलाओं को समस्याओं का अधिक सामना करना पड़ेगा।
2. वृद्ध विधवाओं की अपेक्षा युवा विधवाओं को भावनात्मक समस्याओं का अधिक सामना करना पड़ेगा।
3. आर्थिक रूप से आश्रित विधवाओं को अपेक्षाकृत अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।
4. संयुक्त परिवारों की अपेक्षा एकल परिवारों में रहने वाली विधवा महिलाओं को बंधन और सामाजिक यातनाओं का अधिक सामना करना पड़ेगा।

शोध की विधि:

इस शोध कार्य में विवरणात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) विधियों का प्रयोग किया गया है। 300 उत्तरदाताओं (विधवा महिलाओं) पर आधारित यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग नगर क्षेत्र में केंद्रित है। नमूना चयन के लिए यादृच्छिक नमूना तकनीक (Random Sampling Technique) अपनाई गई। डेटा संकलन के लिए साक्षात्कार विधि, प्रश्नावली तथा अवलोकन तकनीक का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण में प्रतिशत विधि (Percentage Method) का प्रयोग किया गया, जिससे प्राप्त आंकड़ों की तुलना एवं व्याख्या की गई।

सर्वेक्षण आधारित सांख्यिकीय विश्लेषण (300 उत्तरदाता)

तालिका 1: पारिवारिक स्थिति

स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
संयुक्त परिवार	112	37.3%
एकल परिवार	188	62.7%

तालिका 1: पारिवारिक स्थिति का निष्कर्ष:- इस तालिका से स्पष्ट होता है कि एकल परिवारों में विधवा महिलाओं को अधिक सामाजिक और भावनात्मक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

तालिका 2: आर्थिक निर्भरता

स्थिति	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
पूर्णतः आत्मनिर्भर	45	15%
आंशिक रूप से निर्भर	72	24%
पूर्णतः आश्रित	183	61%

तालिका 2: आर्थिक निर्भरता का निष्कर्ष:-यह आंकड़े बताते हैं कि अधिकांश विधवा महिलाएँ आर्थिक रूप से आश्रित हैं, जिससे उनकी आत्मनिर्भरता और आत्म-सम्मान प्रभावित होता है।

तालिका 3: सामाजिक दृष्टिकोण अनुभव

अनुभव	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार	108	36%
तटस्थ व्यवहार	114	38%
भेदभावपूर्ण व्यवहार	78	26%

तालिका 3: सामाजिक दृष्टिकोण अनुभव का निष्कर्ष:-यह तालिका दर्शाती है कि समाज में विधवाओं के प्रति मिश्रित दृष्टिकोण है – कुछ लोग सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करते हैं, वहीं कुछ भेदभावपूर्ण।

तालिका 4: शासकीय योजनाओं से संतुष्टि

संतुष्टि स्तर	उत्तरदाता	प्रतिशत (%)
संतुष्ट	66	22%
आंशिक संतुष्ट	90	30%
असंतुष्ट	144	48%

तालिका 4: शासकीय योजनाओं से संतुष्टि का निष्कर्ष:-इस तालिका के अनुसार अधिकांश उत्तरदाता शासकीय योजनाओं से असंतुष्ट हैं, जो योजनाओं के क्रियान्वयन में सुधार की आवश्यकता को इंगित करता है।

विश्लेषण:

उपरोक्त तालिकाओं के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि विधवा महिलाओं को पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक एवं मानसिक स्तर पर अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। विशेष रूप से एकल परिवारों में रहने वाली और आर्थिक रूप से आश्रित विधवाओं की स्थिति अधिक जटिल पाई गई। युवा विधवाओं में मानसिक तनाव और सामाजिक अस्वीकार्यता की समस्या अधिक देखने को मिली, जबकि वृद्ध विधवाओं को परिवार से अपेक्षाकृत समर्थन प्राप्त हुआ। शासकीय योजनाओं की जानकारी और पहुंच में भी कमी पाई गई, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जागरूकता एवं क्रियान्वयन को और मजबूत करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:

यह शोध स्पष्ट करता है कि विधवा महिलाओं की स्थिति में समय के साथ कुछ सकारात्मक परिवर्तन अवश्य हुए हैं, परंतु अब भी सामाजिक सोच, आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं मानसिक समर्थन में कई चुनौतियाँ शेष हैं। मध्यवर्गीय और एकल परिवारों की विधवाओं को अधिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। वहीं शिक्षित, जागरूक एवं आत्मनिर्भर विधवा महिलाएँ अपेक्षाकृत बेहतर जीवन व्यतीत कर रही हैं। सरकारी योजनाएँ उपयोगी तो हैं, लेकिन उनका क्रियान्वयन एवं लाभ की पहुंच अभी भी सीमित है।

सुझाव:

- स्थानीय स्तर पर विधवाओं के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।
- पुनर्विवाह को सामाजिक स्वीकृति देने हेतु समाज में सकारात्मक संवाद स्थापित किया जाए।
- सरकारी योजनाओं की सरल पहुँच हेतु ग्राम/नगर स्तर पर सहायक केंद्र बनाए जाएँ।
- विधवाओं को स्वरोजगार, कौशल प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहायता के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जाए।
- मानसिक स्वास्थ्य के लिए परामर्श केंद्रों की स्थापना की जाए।

संदर्भ सूची (हिंदी रूपांतरण सहित):

1. भारत की जनगणना, 2011 – भारत सरकार द्वारा प्रकाशित।
2. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की रिपोर्ट, 2023 – भारत सरकार।
3. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5), 2019-21 – स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार।
4. चक्रवर्ती, उमा (1995). "जाति का लैंस के माध्यम से लैंगिक विश्लेषण"।
5. देसाई, सोनाल्दे एवं वेन्नेमन, रीव (2003). "भारत मानव विकास सर्वेक्षण"।
6. छत्तीसगढ़ राज्य विधवा पेंशन योजना विवरणिका, 2022 – राज्य शासन, छत्तीसगढ़।

शोधार्थी:

1. श्रीमती नीलम त्रेहन
2. विषय: समाजशास्त्र
3. भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग